ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. NO.- 218-220

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

हरिराम मीणा के उपन्यासों में वर्णित प्रमुख नारी चरित्र एवं उनकी विशेषताएँ

डॉ0 रुद्र चरण माझी

हिन्दी विभाग, कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस (केआईएसएस), केआईएसएस कैम्पस, भुवनेश्वर (ओडिसा) भारत

Received-13.06.2024, Revised-20.06.2024, Accepted-26.06.2024 **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

सारांश–हरिराम मीणा अपने उपन्यासों में नारी पात्रों को समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उन्हें अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुए दिखाते हैं। हरिराम मीणा ने नारी पात्रों के माध्यम से समाज में उनके संघर्ष, प्रकृति प्रेम, साहस और सहनशीलता को उजागर किया है। हरिराम मीणा के कई उपन्यासों में नारी पात्रों का चित्रण किया गया है, जो साहस, प्रेम, करुणा और समाज में अपनी जगह बनाने के लिए तत्कालीन चुनौतियों से लड़ती हुई नजर आती हैं । उनके उपन्यासों में नारी पात्रों को समाज के विभिन्न पहलुओं का प्रतिस्पर्धात्मक रूप से सामना करते हुए दिखाया गया है, जो उन्हें आत्मनिर्भर और समाज में समानता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। हरिराम मीणा के नारी पात्र अपने छोटे–से–छोटे चरित्र में भी समाज के लिए महत्त्वपूर्ण सन्देश देने की काबिलियत रखते हैं /उनके उपन्यासों के नारी पात्र सामाजिक असमानता के खिलाफ लड़ाई करते हुए दिखाई देते हैं।

कुंजीभूत शब्द– आदिवासी, समरसता, संघर्ष, समानता, प्रतिस्पर्धा, डाकू, काबिलियत, प्रकृति प्रेम, साहस और सहनशीलता।

प्रस्तावना : आदिवासी साहित्यकारों में हरिराम मीणा का नाम महत्त्वपूर्ण है। हरिराम मीणा आदिवासी समाज के अग्रणी बुद्धिजीवी होने के साथ–साथ एक अच्छे कलाकार, कवि, विचारक तथा कहानीकार के रूप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से आदिवासी साहित्य को नई पहचान दी है। उनका साहित्य आदिवासी समाज के वैचारिक मूल्यों को यथार्थ रूप से व्यक्त करता है। श्री हरिराम मीणा 2012 ई. में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने साहित्य और प्रशासनिक पुलिस सेवा क्षेत्र में अद्वितीय सेवाएँ प्रदान की। साहित्य सृजन के क्षेत्र में उनका कार्य अब भी जारी है। उनके द्वारा रचित कविता संग्रह 'हाँ चाँद मेरा है' के लिए उन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2003 ई. सर्वोच्च 'मीरा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उसी वर्ष उनकी दूसरी पुस्तक 'रोया नहीं था यक्ष' प्रकाशित हुआ, उसके बाद से उन्हें हिंदी साहित्य में एक उभरते हुए साहित्यकार के रूप में पहचाना जाने लगा एक पुलिस अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए, हरिराम मीणा 15 वर्षों तक 'मानगढ़ नरसंहार' जैसी ऐतिहासिक घटना के बारे में तथ्य एकत्रित करते रहे। इस नर संहार को लोगों तक पहुंचाने हेतु वर्ष 2002–2003 ई. में हरिराम मीणा के कड़ी मेहनत और दूरदर्शन के सहयोग से 'रूबरू' कार्यक्रम के माध्यम से दो एपिसोड प्रसारित किया गया, जिसे लाखों लोगों ने देखा और सराहा। 2008 ई. में हरिराम मीणा ने 'धूणी तपे तीर' नामक उपन्यास में इस नरसंहार को केंद्र में रखकर लिखे। पुलिस कार्यकाल के दौरान 15 वर्ष की खोज को इस उपन्यास के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया और लोग भी इस उपन्यास को पसंद करने लगे। वर्तमान समय में यह उपन्यास पांच भाषाओं में अनूदित होकर उपलब्ध है और इस घटनाओं पर सैकड़ों लोग शोध–कार्य कर रहे हैं। इससे इस उपन्यास की लोकप्रियता के बारे पता चलता है।

विषय प्रवेश – हरिराम मीणा द्वारा रचित तीन उपन्यास अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। उनके द्वारा रचित प्रथम उपन्यास 'धूणी तपे तीर' साहित्य संस्थान, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2008 ई. में प्रकाशित हुआ। वर्ष 2019 ई. उनके द्वारा रचित दूसरा उपन्यास 'डांग' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ और वर्ष 2023 ई. में उनका तीसरा उपन्यास 'ब्लेक होल में स्त्री' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ था। इन तीनों उपन्यासों में स्त्री पात्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। अग्रांकित भागों में उन नारी पात्रों का विश्लेषण किया जायेगा।

प्रमुख नारी पात्र : कमली – 'धूणी तपे तीर' उपन्यास के नारी पात्रों में 'कमली' एक महत्त्वपूर्ण किरदार के रूप में सामने आती है। 'संपसभा' द्वारा गठित 'रक्षादल' जब युद्ध का अभ्यास कर रहे होते हैं तो उन्हें देखकर कमली अपने साथियों को बुलाती और कहती है– "पहले उधर देखो,' करीब दो फर्लांग दूरी पर पठार के दूसरे छोर की ओर खड़े सम्प–सभा के रक्षादल की दर्जनों सदस्यों के ओर इशारा करते हुए कमली ने यह बात कही । युवा सदस्यों के हाथों में बंदूकें और धनुष–बाण थे।' तेरा मतलब हम बंदूकें चलायें।'–दूसरी सखी विस्मयपूर्वक बोली।– 'देख यह मेरे हाथ में क्या है? कमली बोली। 'यह तो गोफन है कमली। दूसरी सखी जवाब रखी। 'छोरे जब बंदूक चलायेंगे तो हम क्या गोफन नहीं चला सकते?'–कमली बोली।"

तत्कालीन अंग्रेज सरकार के विरुद्ध चारों ओर विद्रोह दिखाई देने लगा था। सभी लोग उसमें योगदान दे रहे थे। देश को आजाद करना ही इसका मूल लक्ष्य था। पूंजा धीरा की होनहार बेटी कमली भी अपने साथियों के साथ इस आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहती थी। कमली की अगुवाई में सहेलियों के साथ हुए इस ज्ञानवर्धक संवाद के बाद, कमली एवं उसकी सहेलियों ने गोफन से पत्थर के टुकड़े फेंकने का अभ्यास किया। 'गेर नृत्य' (सामूहिक नृत्य)करने वाली लड़कियाँ गोफन की स्पर्धा में सहज भाव से भाग लेने लगे। गोफन से फेंके जाने के लिए सभी सखियां पत्थरों के टुकड़े इकट्ठा करती और गोफन में भर कर उन्हें कुण्डा की घाटी में फेंकतीं। बारी–बारी से यह क्रम चला। उन लड़कियों के लिए गोफन से पत्थर फेंकना कोई नया करतब नहीं था। यह उनका पुश्तैनी काम था। फसल को नुकसान पहुंचाने वाले जंगली जानवरों, यथा रोजड़े, सुअर, नील गाय, और दाने चुगने वाले पखेरूओं को भगाने के लिए गोफन का इस्तेमाल आदिवासी समुदाय में सदियों–सदियों से किया जाता रहा था। परन्तु यह काम अब उन्हें अपनी सुरक्षा के लिये करना था। अपने देश की सुरक्षा के लिए करना था। कमली अपने साथियों के साथ इस काम में आगे बढ़ती रही।

कमली और उसके साथियों के उपर्युक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों के बारे में उन्हें थोड़ी–बहुत जानकारी थी। पुरुषों द्वारा परिचालित 'रक्षादल' से प्रेरित होकर सामाजिक सुरक्षा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए कमली एवं साथियों ने निर्णय लिया। इस घटना से कमली ने सिर्फ एक निडर, साहसी और हिम्मतवाली लड़की के रूप में ही नहीं बल्कि एक समूह को नेतृत्व प्रदान करने वाली 'स्त्री' के रूप में भी उभर कर आती है। 'धूणी तपे तीर' उपन्यास में नारी शक्ति का विकास को लेखक ने रेखांकित किया है।

अनुरुपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

प्रमुख नारी पात्र : सुगनी – 'धूणी तपे तीर' उपन्यास के नारी पात्रों में से 'सुगनी' दूसरी महत्त्वपूर्ण नारी पात्र है। नारी शक्ति का प्रचंड रूप मानगढ़ पहाड़ पर हुए नरसंहार के दौरान देखने को मिलता है। हरिराम मीणा के स्त्री पत्र कभी शोषित, पीड़ित, वंचित दिखाई नहीं देते। एक नारी एक दल का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक नारी ब्रिटिश सैनिकों के विरुद्ध अपने पारंपरिक हथियारों से लड़ाई करते–करते शहादत को प्राप्त हो रहे थे परंतु कोई रुके नहीं, न ही वे डरे, पारंपरिक हथियारों के माध्यम से अंग्रेजों से जीत नहीं पाएंगे यह जानते हुए भी डट–कर लड़ते रहे। उनके इस अदम्य साहस ने शहादत प्राप्त नारी शक्ति को हमेशा के लिए अमर बना दिया।

उपन्यासकार इस घटना को रेखांकित करते हुए लिखते हैं– "पंद्रह–बीस आदिवासी स्त्रियां एक समूह के रूप में हाथों में कुल्हाड़ी व पत्थर लिये उत्तरी पठार से 'गुरु महाराज की जय' बोलती हुई दक्षिणी दिशा की ओर बढ़ी, जहां गोलीबारी का मुख्य लक्ष्य–स्थल था। कुछ ही आगे खून से सनी मृत देह, बेहोश और तड़पते आदमी पड़े हुए थे। लेम्बा व जेता भगतों ने कुछ अन्य कार्यकर्ताओं की मदद से औरतों के उस समूह को बड़ी मुश्किल से रोका। ढालरिया गांव की सुगनी इस स्त्री–दल का नेतृत्व कर रही थी। उसने बुलंद आवाज में कहा– "जब हमारे आदमी ही मर रहे हैं, तो हम जी कर क्या करेंगे ? संकट की इस घड़ी में हमें जान की परवाह नहीं। जो बन पड़ेगा वह हम करेंगे।"

सुगनी के कथन से त्याग और बलिदान तथा देश के प्रति समर्पण की भावना साफ झलक रही थी। युद्ध में उनके सामने उनके पति शहादत प्राप्त कर रहे थे। एक विधवा कि जिन्दगी जीने से बेहतर है, की लड़ते–लड़ते मर जाएं। सुगनी का आत्म बलिदान, सिर्फ एक घटना नहीं, बल्कि एक सन्देश है, अन्य नारी शक्ति को जागृत करने के लिए, वे भी जागें और इस आन्दोलन में भाग लें।

प्रमुख नारी पात्र : मंगली – आदिवासी स्त्रियों की इस रणहुंकार को देख कर पुरुष 'रक्षादल' भी अचंभित था। वे सभी तत्कालीन परिस्थिति को देखते हुए लड़ने–मरने के लिए तैयार थे, ये जानते हुए भी कि विपक्ष आधुनिक अस्त्र–शस्त्र से सुसज्जित है। इस युद्ध के समय दूसरे छोर को संभालती कमली की सहेली मंगली की स्थिति को स्पष्ट करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं– " अब मंगली स्त्रियों में नये प्राण फूंककर उनके दल का मोर्चा संभाले हुए थी। अपनी प्रिय सहेली कमली व पानो की मौत के बाद वह कुछ पलों के लिए ही सदमे में रही थी। गोविन्द गुरु के ऐलान के बाद उसने स्त्रियों का पुनः समूह बनाया। लड़ाई के लिए उनके मनोबल को ऊंचा उठाया। गोफन और कुल्हाड़ियां उनके हथियार थे। कुछ के पास धनुष–बाण भी। अनेक रणचंडी भवानियों की तरह वे अपने हिस्से की लड़ाई लड़ रही थी।"

अपने अधिकार और स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश सेना के विरुद्ध आदिवासी स्त्रियां अपने पारंपरिक अस्त्र–शस्त्र के सहारे लड़ाई लड़ रहीं थीं। वे भली–भांति जानती थी कि ब्रिटिश सेना से जीत पाना असंभव है, फिर भी आत्म–सम्मान और स्वाभिमान के लिए अंतिम समय तकलड़ कर आदिवासी धर्म को निभाया । इस प्रकार आदिवासी स्त्रियों का बलिदान आने वाली पीढ़ियों के लिए अमर गाथा के रूप में संरक्षित होकर कालजयी बन जाए। मंगली कभी युद्ध के मैदान से पीछे नहीं हटी। उसके शरीर में इस देश और मिट्टी का गर्म रक्त प्रवाहित हो रहा था, जो अंग्रेज सैनिकों को काल की तरह एक पल में ही खत्म कर देना चाहती थी।

प्रमुख नारी पात्र : गनी – 'धूणी तपे तीर' उपन्यास के सबसे प्रमुख नारी पात्रों में से 'गनी' की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। गनी उपन्यास के नायक गोविंद गुरु की दूसरी पत्नी होने के साथ–साथ दो बच्चों की माँ भी है। गनी एक माँ की जिम्मेदारी निभाने के साथ–साथ एक जिम्मेदार पत्नी की भूमिका भी निभाती है। गोविन्द गुरु को यथावत मदद करना ही अपना पत्नी धर्म समझती है। 'गनी' गोविन्द गुरु की पत्नी होने के नाते गुरु माँ की जिम्मेदारी को भी यथा–संभव निभाने की कोशिश करती है। 'संप सभा' में कार्य कर रहे सभी साथियों के लिए खाना बनाना एवं खाना खिलाना उसकी जिम्मेदारी है। 'संप सभा' में कार्यरत सभी लड़के एवं लड़कियों को माँ का प्यार देती है, उन्हें अपना परिवार मानती है। जब उसे पता चलता है कि 'संप सभा' में कार्यरत भगत पूंजा धीरा की बेटी कमली किसी लड़के को पसंद कर रही है, तो उस माँ का मन तड़प उठता है, वह कहती है– "बेटी, देखते–देखते कितनी बड़ी हो गयी री! किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। तेरा गुरु बाबा और भगत बापु तो जागरती के काम में इतना रम गये हैं कि बच्चों का कोई खयाल ही नहीं। चल मैं ही तेरे लिए कोई गबरू सा छोरा देखती हूं।' गुरु माई की बात सुनकर कमली के सांवले चेहरे पर सुर्खी उभर आयी। वह लजा गयी। गुरु माँ की छाती से लिपट गयी। समझदारी की इस उम्र में पहली बार उसने महसूस किया, माँ का प्यार। ममत्व के भाव–बौछारों से कमली का ह्रदय भीग गया। उसकी आंखें नम दिखायी दीं। उसे अपनी माँ की याद आयी, जो बचपन में ताव की बीमारी से चल बसी थी। उसे लगा, खोयी माँ फिर से मिल गयी।"

गनी के इस कथन से उसके अंदर समाई हुई मातृत्व की झलक साफ दिखाई दे रही है। 'संप सभा' में कार्यरत एक कार्यकर्ता के बेटी के प्रति इस तरह का प्यार उसे एक स्वतंत्र दर्जा देती है। 'धूणी तपे तीर' उपन्यास में गनी का छोटे–सा चरित्र है, परंतु उस छोटे –से चरित्र में भी वह काफी प्रभावशाली दिखती है।

प्रमुख नारी पात्र : लाली मीणा – हरिराम मीणा द्वारा रचित उनके दूसरे उपन्यास 'डांग' में भी आदिवासी स्त्रियों के सामाजिक संघर्ष को दिखाया गया है। 'डांग' क्षेत्र में आदिवासी 'मीणा' जनजाति का दबदबा था। इस क्षेत्र की प्रसिद्ध लोकगीत गायिका 'लाली' भी मीणा जाति से थी। इस के बावजूद अपनी नृत्य, कला के माध्यम से विसंगति परिस्थिति में घर से बाहर जाकर नृत्य करना लाली मीणा का साहस को दिखाता है। एक कार्यक्रम समाप्त करके आते समय जीप के ड्राइवर की मिली–भगत से लाली के सारे रुपये–पैसे और अन्य वस्तुओं को डाकुओं के द्वारा लूट लिया जाता है। किसी आदिवासी स्त्री को लूटना तत्कालीन समय में यह पहली घटना था। यह एक आदिवासी स्त्री की अस्मिता पर सवाल थी। इस घटना को गावं वालों ने आड़े हाथ लिया। उपन्यासकार इस घटना को रेखांकित करते हुए लिखते हैं– "लाली के दल को डकैतों द्वारा लूटने की ख़बर आग की तरह सुबह समूचे इलाके में फैल गयी। लाली केवल लोकगीतों के दंगल की कलाकार ही नहीं थी, बल्कि वह एक महिला थी और महिला के साथ किन्हीं गैर आदमियों द्वारा लूट व बदसलूकी इलाके के मीणा समुदाय को बर्दाश्त नहीं हो सकती थी। जीप चालक बरवासन के निकट के गाँव अमरगढ़ का वासी था। कुछ उत्साही मीणा युवकों ने जीप चालक को गाँव के बाहर बुलाकर सारा वाकिया बताने के लिए धमकाया। उससे पूछताछ की। उसकी जमकर पिटाई कर दी। उसने सारा भेद खोल दिया। जैसे ही पता लगा कि जगन गूजर ने यह लूटपाट की है। सपोटरा तहसील के मीणाओं ने पंचायत का ऐलान कर दिया। पंचायत में सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि गूजर ने मीणाओं के गढ़ में डाका डाला है, उसका बदला अवश्य लिया जायेगा।"

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

डाकुओं के क्षेत्र 'डांग' में एक स्त्री होकर रात को नृत्य करना एवं रात को ही रुपये–पैसे लेकर निकलना लाली मीणा की अदम्य साहस एवं हिम्मत को देखता है। लाली मीणा निडर स्त्री की प्रतीक है। आदिवासी समाज की यह विशेषता रही है कि वे हमेशा सामूहिकता एवं सहजीविता के साथ जीवन जीते हैं। लाली के दल को डकैतों द्वारा लूटना आदिवासियों की सामूहिकता के प्रति प्रश्न चिन्ह था। यह एक समुदाय के अस्तित्व और अस्मिता की प्रति अपमान था। इसलिए तत्कालीन मीणा समाज अपने समाज की एक स्त्री की अस्मिता के लिए एक खूंखार डाकू से बदला लेने का निर्णय करने में भी पीछे नहीं हटा ।उपन्यासकार ने लाली मीणा के माध्यम से आदिवासियों के स्त्री के प्रति सम्मान को रेखांकित किया है।

प्रमुख नारी पात्र : अमली – उपन्यासकार हरिराम मीणा 'डांग' उपन्यास में स्त्री संघर्ष को दिखाते हुए आदिवासी नट नृत्य करने वाली 'अमली' की चर्चा करते हैं। अमली को 'तिमलगढ़' के तत्कालीन राजा ने एक बार चुनौती दी, कि अगर अमली किले के दरवाजा से एक कोस दूर रस्सी पर चलकर दिखा दे, तो उसे आधा राज्य की दे दिया जायेगा।

राजा की इस चुनौती को लेकर पूरा 'नट समाज' डरा हुआ था, अगर अमली की हार हुई तो राजा न जाने क्या करेगा, क्या सजा देगा। परन्तु अमली झुकी नहीं ।यह एक नट स्त्री के स्वाभिमान का प्रश्न था। यह एक आदिवासी स्त्री की अस्मिता, उसके शिल्प, कला के प्रति उपेक्षा का भाव था। अमली बोलती है "राजा ने मेरी परीछा लेनी चाई है। मैं कैसे पीछे हट जाऊँगी? "

यह बात सिर्फ अमली की नहीं थी, बल्कि समग्र आदिवासी स्त्रियों के आत्मविश्वास की भी थी। अमली जानती थी कि वह कभी हारेगी नहीं, परन्तु व षड्यंत्र से हार गई। 'तिमलगढ़' की महारानी जब देखा कि अमली बहुत जल्द एक कोस पार करने वाली है, तो उन्होंने अपने आदमियों से कहकर रस्सी को ही कटवा दिया और अमली रस्सी से गिर गई।

यहाँ अमली, रस्सी से नहीं गिरी थी! बल्कि एक आदिवासी स्त्री के सामने 'तिमलगढ़' के राजसत्ता धराशायी हो गई थी। अमली सचमुच निडर और हिम्मतवाली लड़की थी। वह जानती थी की राजा इतने जल्द आधा राज्य देने वाला है नहीं परंतु आदिवासी कला को प्रति जो प्रश्न खड़ा हुआ था अमली उस कला को सम्मान में अपनी कौशल दिखाना चाहती थी। परंतु राजतन्त्र की षड्यन्त्र ने उसे हरा दिया। अंततः नटनी हारकर भी जीत गई और तिमलगढ़ की राजा जीत कर भी हार गया। एक आदिवासी नटनी ने पूरे राजसत्ता को हिला कर रख दिया था । हरिराम मीणा नटनी के माध्यम से एक आदिवासी स्त्री के प्रति अपनी संवेदना को दिखाया है।

प्रमुख नारी पात्र : राजो – 'डांग' उपन्यास में आदिवासी स्त्री के अस्तित्व को किस तरह तत्कालीन आदिवासी पितृसत्तात्मक समाज अपने स्वार्थ के लिये इस्तेमाल करता है, उसका सटीक उदाहरण उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है। "बगडेर गावं निवासी वीरीसिंह पहलवान की लड़की राजो की शादी श्यामापुरा के एक लड़के से बचपन में हुई थी। लम्बी बीमारी के कारण राजो की पति की मौत हो जाती है। सालों बाद राजो की पुलिस में नौकरी लगी थी यह सुन कर श्यामपुरा गाँव के 50–60 आदमी यह कहते हुए आये थे कि मरने वाला राजो की देवर था, अब राजो को उसके पति के घर जाने दिया जाये।"

यह घटना तत्कालीन समाज में स्त्री की स्थिति को दर्शाती है। यह दशा अब भी बरक़रार है। उस समय ह एक नारी को सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए पुरुष इस्तेमाल करते थे। वर्तमान के अधिकांश पुरुष भी वही कर रहें हैं। आदिवासी समाज भी धीरे–धीरे दूसरे लोगों के बहकावे में आकर अपने अस्तित्व को मिटाने पर लगे हुए हैं। राजो एक आदिवासी महिला होने पर भी घर से निकालने का फैसला लेता है। पढ़– लिखकर खुद अपने पैर पर खड़ा होना चाहता है। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ने उसे विधवा करार कर दिया था, परंतु राजो निराश नहीं हुई और पढ़ लिखकर नौकरी करने लगा, उसके नौकरी के बाद पुरुषवादी मानसिकता जागता है और इस तरह की घृणित कार्य करने के लिए भी नहीं झुकता। पुरुष हमेशा नारी को शोषण करते आ रहा है और आदिवासी समाज भले कितनी सामूहिकता ओर सहजीविता की बात करें परंतु सच्चाई कुछ और होती है ई उपन्यासकार इस घटना के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं।

निष्कर्ष – हरिराम मीणा के नारी चरित्र की यह विशेषता रही की वे कभी हताशा, निराशा के बीच नहीं रहे। वे परिस्थिति के साथ लड़ना सिख है। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए वे हमेशा संघर्ष करते हैं। हरिराम मीणा के स्त्री पात्र विशेष न होकर आम साधारण होते हैं। एक साधारण स्त्री को विशेष बनाना हरिराम मीणा की कलम की ताकत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मीणा हरि राम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण,2008,पृष्ठ–315
2. मीणा हरि राम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ–366
3. मीणा हरि राम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ–366
4. मीणा हरि राम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण,2008,पृष्ठ–308
5. मीणा हरि राम, डांग, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019, पृष्ठ–47
6. मीणा हरि राम, डांग, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019, पृष्ठ–53
7. मीणा हरि राम, डांग, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019, पृष्ठ–78

*****